IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

"वैश्विक परिप्रेक्ष्य में गाँधी के दर्शन की प्रासंगिकता"

डा ओम प्रकाश यादव[1]
असिस्टेंट प्रोफेसर रजत डिग्री कॉलेज लखनऊ
डा मनीषा सिंह[2]
असिस्टेंट प्रोफेसर रजत कॉलेज ऑफ़ एजूकेशन एंड मैनेजमेंट लखनऊ

शोध सारांश

गांधी जी के दर्शन एवं विधार को साधारणतया गांधीवाद के रूप में जाना जाता हैए1936 में अपने विवारों को प्रकट करते हुये स्वयं कहा था कि गाँधीवाद नाम की कोई चीज नहीं है और न ही अपने पीछे ऐसा कुछ छोडकर जाना चाहता हूँ एमैं इस बात का भी दावा नहीं करता है कि मैंने किसी नवीन सिद्धान्त को जन्म दिया है। मैंने नितांत नैसर्गिक सत्थों को दैनिक जीवन और उनकी समस्याओं पर लागू करने का प्रयान मात्र किया है। गाँधी जी ने अपने जिन सत्य अहिंसा एवं विश्व शांति के जिन सिद्धान्तों को प्रस्थापित किया। वे सिद्धान्त अनादि काल से भारत में प्रतिस्थापित हैं। 28 मई 1936 की हरिजन पत्रिका में गाँधी ने स्पष्ट किया है कि नये सिद्धान्तों को जन्म देने का दावा में नहीं करताए मैने तो अपने उन से सनातन सत्य को दैनिक जीवन एवं समस्याओं पर लागू करने का प्रयास किया। भारतीय चिंतन का मूल आधार परमात्मा की एकात्मकता हैए जिसका साक्षात्कार मानव जीवन का परम लक्ष्य है। इसे भारतीय मनिषियों ने आध्यात्मिक अनुभूति कहा हैए वस्तुतः गाँधी एक ऐसे आध्यात्मिक युग पुरुष के रूप में अवतरित हुये जिन्होंने प्राचीन सिद्धान्तों एवं आदर्श को व्यावहारिक दिशा दिया तथा जनमानस को भी इसका प्रयोग करना सिखाकर यह सिद्ध करने का कार्य किया कि सामान्य मनुष्य भी महान आदर्श पर चलकर महामानव बन सकता है।

महत्वपूर्ण शब्द गांधीवाद ए अनादि काल ए सनातन सत्यए साक्षात्कारए आध्यात्मिक अनुभूति

प्रस्तावना

गाँधीजी ने नितांत वैयक्तिक प्राचीन सिद्धान्तों को जहाँ एक और सामाजिक परिवेश प्रदान किया वहीं दूसरी ओर उसे सक्रिय कर व्यवहारिक बनाया। गाँधीवाद की व्याख्या करते हुए डॉ० पटटामि सीता रमैया ने उल्लखित किया कि गांधीवाद वस्तुतः भारत की उस आधार परख आध्यात्मिक जीवन दृष्टि तथा सास्कृतिक परम्परा का आधुनिक परिस्थितियों में अनुकूलन है जो शताब्दियों से सत्यए अहिंसाए सेवाए प्रेमए सहिष्णुताए अस्तेयए अपरिग्रहए आत्मसंयमए त्याग आदि दैनिक मूल्यों को भौतिक जीवन की अपेक्षा अधिक वरण करने योग्य मानती आयी है।[१] इन नैतिक मूल्यों के आधार पर

गांधी जी ने विविध सामाजिकए धार्मिकए आर्थिक एवं राजनैतिक समस्याओं का असीमित समाधान प्रस्तुत किया जो स्वयं में विशिष्ट है। जहाँ तक वर्तमान संदर्भ गांधीवादी सामाजिक चिंतन का प्रश्न हैद्ध उसे विविध आयामों में देखा जा सकता हैण् जैसे वैश्विक संरकृति का भारतीय समाज पर प्रभावए सामाजिक विघटन के घातक प्रभावए गाँधीवादी सामाजिक चिंतन की वैचारिकता।।

वैश्विक संस्कृति का भारतीय समाज पर प्रभाव

वैश्विक संस्कृति का भारतीय समाज पर पड़ रहे प्रभाव के परिणाम स्वरूप सामाजिक विघटन का स्वरूप परिलक्षित होने लगा है जिसके संदर्भ में गांधीवादी सामाजिक चिंतन की स्वतः सिद्ध है। वैश्विक संस्कृति के प्रभाव के कारण भारत में एक नयी सामाजिक व्यवस्था का जन्म हो रहा है और इसमें एक नई तरह की गुलामी पर निर्भरता को बढ़ावा मिल रहा है। उद्योग.धंधे बंद हो रहे हैं। खादए बीज पर बहुराष्ट्रीय कम्पनियों का शिकंजा कसता चला जा रहा है। परम्परागत खेती समाप्त हो रही है। कल का उत्पादक नागरिक आज का उपभोक्ता बन चला जा रहा है। आवश्यक आवश्यकताओं के बजाय भोग.विलास की वृत्ति में वृद्धि हुई है। देश की योजना आयोग द्वारा गठित परामर्शदाता समितियों में विश्व बैंक एवं अमेरिकी कंसल्टेंसी सर्विस मैकेंजी के प्रतिनिधि शामिल किये जा रहे है। बहुराष्ट्रीय कम्पनियों एवं पाश्चात्य देशों के प्रभाव में लिये गये निर्णय से भारत में न केवल आर्थिक असमानता की खाई की हो रही है बल्कि इससे सामाजिक द्वद भी पैदा हो रहे हैं। नक्सलवाद इसका जीवंत दृष्टांत है। वैश्विक सांस्कृतिक के प्रभाव के कारण सांस्कृतिक क्षरण के अन्तर्गत भारतीय सामाजिक मूल्य अपने अस्तित्व के लिये संघर्ष कर रहा है। भारतीय समाज पर निरंतर बाजारवादी ताकतों पर वर्चस्व स्थापित होता जा रहा है। नव.साम्राज्यवादी ताकतों द्वारा ज्ञान एवं सूचनाओं हो रहा है। इनके द्वारा अपने से निम्न हर ज्ञान को अवैध बताया जा रहा है। संचार कान्ति के बाद इसमें और तेजी आई है। इससे मुक्ति गांधी के विचारों को व्यवहारिक घरातल पर प्रतिस्थापित करने से ही मिल सकती है। डेनियल इल.द अमिम ऑफ द पोस्ट इंडस्ट्रियल सोसायटी ए बेनार इन सोशल कोकांस्टिंग में बिल्कुल सही कहा है कि राजनीति औद्योगीकरण का रंगमंच बन गया है। देश के विभिन्न आर्थिकए सामाजिक प्रबंधन में बहुराष्ट्रीय साम्राज्यवाद का नियंत्रण दिखायी पड़ता है। खेती भी इनमें से एक है जिसके शिकार हो रहे है खेतिहर मजदूर। आयकर अधिनियम 1961 की धारा 10 के अनुसार खेती को कर मुक्त किया गया है। इसके विपरीत भोली से होने वाली आय पर कर लगाने की मांग कर रहे हैं। उहीं तक कृषि पर संवैधानिक दृष्टिकोण का प्रश्न हैद्ध इसके लिए भारतीय संविधान के संघीय सूची में 82 विषयों पर संसद को गैर कृषि क्षेत्रों पर कर लगाने का अधिकार देते हैं और आशिष्ट का विषयों से कोई भी अतिरिक्त विधायी शक्ति प्राप्त न्हीं की जा सकतीए जबकि राज्य सूची के 46 विषय राज्यों को खेती पर आयकर लगाने का अधिकार देते हैं। सामाजिक विघटन के घातक परिणाम सामाजिक विधटन का भारतीय समाज पर वृहद प्रभाव बड़ा जिसके परिणाम स्वरूप सामाजिक संरचना एवं व्यवस्था में बदलाव परिलक्षित हो रहा है। अतः इस संदर्भ में गांधीवादी सामाजिक चिंतन की महत्ता स्वतः सिद्ध है। सामाजिक विघटन के सदर्भ में धौगस एवं नैनकी का कथन है कि सामाजिक विघटन कोई असामान्य नियम भंग करने की व्यक्तिगत घटनायें प्रत्येक स्थान और प्रत्येक अवधि में सामाजिक संस्थाओं पर विघटनकारी प्रभाव डालती है। यदि उनका उचित प्रतिकार न किया जाये तो वे कभी भी बढ़ सकती है। इस कथन से

स्पष्ट होता है कि सामाजिक विघटन कोई ऐसी दशा नहीं है जो किसी समाज में विघटन हो और किसी में बिल्कुल न हो। वास्तविकता यह है कि प्रत्येक समाज में सामाजिक विघटन के लक्षण सदैव विद्यमान रहते हैं। वहीं न्यूमेयर का कथन है कि सामाजिक केवल एक असंतुलित दशा ही नहीं है बल्कि यह मुख्यतः एक प्रक्रिया है। इस प्रकार यह न तो घटनाओं और ना ही इयों को प्रदर्शित करती हैए जो व्यक्तियों और समूहों की स्थानक क्रियाशीलता में बाधा उत्पन्न करती है। न्यूमेयमर के यह स्पष्ट है कि सामाजिक विघटन की दशा एक प्रक्रिया के रूप में उत्पन्न होती है। यही आधुनिक विचारधारा यह कतिक विघटन परिवर्तन की प्रक्रिया लोगों के विधारों वहार के तरीकों सामाजिक मूल्यों तथा नियंत्रण के पानी में इतना परिवर्तन उत्पन्न कर देती है कि अपनी परिस्थितियों से एकाएक अनुकूलन नहीं कर पाते। एवं में समूह की प्रत्याशाओं तथा व्यवहार के नए तरीकों सत्य में इतनी भिन्नता पैदा हो जाती है कि सामाजिक विघटन ही इसका स्वाभाविक परिणाम होता हैए

वर्तमान समय में भारत वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाकर औद्योगीकरण और प्रौद्योगिकी प्रशन्न भौतिक प्रगति कर ली हैण अपने लिए विलासिता के समस्त साधन भी उपलब्ध कर लिये है राजनीतिकए आर्थिक और सामाजिक प्रगति भी हासिल कर ली है किन्तु इतनी सारी भौतिक उपलब्धियों को बावजूद क्या मानव की आंतरिक हताशा कुंठा मनोव्यथाऔर नैराश्य पूर्ण स्थिति में कमी आई हैद्द क्या मूल्यों भी कमी नहीं आई हैद्द क्या मानवीय मूल्यों के समक्ष संकट उपस्थित नहीं हुआ हैद्द क्या भूमण्डलीकरण विश्व ग्राम या विश्व कुटुंब की धारणाओ ने विश्व के विभिन्न देशों के निवासियो के पूर्वाग्रही दृष्टिकोण और दिलों की दूरियों को कम किया हैद्द हम एक और न्यूक्लियर युद्ध के खतरे में हैं तो दूसरी और पर्यावरण प्रदूषण के खतरे में है। ओजोन परत में छिद्र होने से सूर्य की पराबैगनी किरणों के दुष्परिणाम जगजाहिर है। मानव अस्तित्व के समक्ष ऐसा सकट पूर्व में कभी नहीं था। इन परिस्थितियों में हम यह कैसे मान लें कि भौतिक प्रगति ही वास्तविक प्रगति है। क्या नैतिकता मानवता आध्यात्मिकता आदि अर्थहीन सारखीन एवं अप्रासंगिक हैद्द आज देश को गहरे अंधकार की तरफ ले जाया जा रहा है और मुट्ठी भर लोग जिसे हम विकास का उजाला बता रहे है हम उसमे विनाश की पदचाप सुन रहे हैं। आर्थिकए राजनीतिक सामाजिक और नैतिक स्तर पर जैसी गिरावट आज देख देख रहे हैण वह अभूतपूर्व है। ऐसे समय में हमारा मूक व असहाय दर्शक बने रहना गांधी के प्रति एवं अपने धर्म के प्रति अक्षय हो होगा। गांधी ने अहिंसक प्रतिकार का जो रास्ता हमें दिखाया थाण उसकी आज ज्यादा जरूरत है यदि इस वक्त हम इस चुनौती को स्वीकार न कर सके तो देश में अराजकता और तानाशाही का खतरा आसन्न रहेगा।

गांधीवादी सामाजिक चिंतन की वैचारिकता

महात्मा गांधी के दर्शन को देखने और समझने की अनेक दृष्टियों हैं। पिछले 50 वर्षों से उन्हें सत्यए अहिंसाव विश्व शान्ति के परिप्रेक्ष्य में देखा जाता रहा है। ऐसा माना जा रहा है कि भारतीय जनमानस और भारतीय हमेशा से इन्ही सिद्धांतो पर टिके है। जब.जब ये आधार कुछ कमजोर होने लगते हैं तब.तब हमारे यहाँ राम कृष्ण बुद्ध महावीर गांधी मनुष्य आकर नया आधार प्रदान करते हैं। बीसवीं शताब्दी के पूर्वाद्ध में नया सामाजिक चिंतन का आधार प्रदान

करने का प्रयास गांधी ने किया था। गांधी के दर्शन का यह मूलभू विश्वास है कि प्रत्येक वस्तु और प्रत्येक प्राणी एक अपने एक अप्रवर्तनीय नियम से संचालित है और वह नियम ईश्वर है जिसे गांधी जी

के रूप में मानते है। सत्य गांधी जी के लिए अंतिम न होकर स्वमेव सर्वोच्य सत्ता है। अत सत्य ही ईश्वर है। ये सत्य और अहिंसा को लक्ष्य का माध्यम मानते थे। प्रेम और करूणा के अति रिक्त अहिंसा के सिद्धान्त में जीवन की पवित्रता का भाव निहित है। इसमे मानय का सम्मान और प्रतिष्ठा भी सम्मिलित भी है। गांधी के अनुसार नैतिकता मानव जीवन का आधार है। समाज और मानव का अस्तित्व और उसकी प्रगति उसके मैतिक जीवन पर ही निर्भर होती है। गांधी कहते हैण सर्वोच्य नैतिक नियमए जैसा कि हमने देखा यह है कि हमको मानव जाति की भलाई के लिए सब कुछ छोड़कर कार्य करना चाहिए। गांधीजी कोरे आदर्शवादी नहीं थे बल्कि वे जो सोचते थे उसे प्रयोग में लाते थे। गाधी ने स्त्रियों को समाज में समुचित स्थान दिलाने के लिए उनके उबित अधिकारों का प्रतिपादन किया। ये नारी को ईश्वर की श्रेष्ठतम कृति मानते हैं। गांधी पूर्णरूपेण जीवन मूल्यों पर आधारित जीवन दर्शन को प्रस्तुत करते हैं। यह लक्ष्य की शुद्धता के साथ.साथ साधनों की पवित्रता के आग्रह को आवश्यक रूप से स्वीकार करने पर जोर देते हैं। वर्तमान शताब्दी का संघर्ष जीवन मूल्यों का ही संघर्ष है। नैतिकता का समावेश उपयोगी एवं अपेक्षित है। आज हम गाधीजी को जीवित देखना चाहते हैं। विचार के रूप में गाधीजी को जीवित देखने के पीछे दो कारण मुख्य रूप से गतिशील है. प्रथम हमारी श्रद्धा। द्वितीय गाधीजी के विचारों की आध्यात्मिक और नैतिक पृष्ठभूमि। गांधी दर्शन के अनुकरण से हम राष्ट्रीय जीवन में व्याप्त हिंसाए अविश्वासए घृणा और अहंकार पर टिकी वर्तमान सभ्यता के विविध दोषों को सरलता से दूर कर सकते हैं और सामाजिक समरसता की स्थिति कायम कर सकते हैं।

इस प्रकार गांधीजी वास्तव में एक महान पुरुष थे जिन्होंने राष्ट्र को स्वतंत्र कराने के अतिरिक्त उसके विकास तथा मार्गदर्शन में भी महान योगदान दिया। अल्बर्ट आइन्सटीन के शब्दी में गाधीजी जनता के ऐसे नेता थे जिसे किसी वाह्य सत्ता की सहायता प्राप्त नहीं थी। यह एक ऐसे राजनीतिज्ञ थेए जिनकी सफलता न चालाकी पर आधारित थी और न ही किसी शित्पिक उपायों के ज्ञान पर बल्कि मात्र उनसे व्यक्तित्व कीए जो दूसरों को कायल कर देने की शक्ति पर आधारित थी। यह एक ऐसे विजयी योद्धा थे जिसने बल प्रयोग का सदा उपहास किया। वह बुद्धिमानए दृढ़ संकल्पीए नम्र और अडिग निश्चय के व्यक्ति थे। उन्होंने अपनी सारी ताकत अपने देशवासियों को उठाने में और उनकी दशा सुधारने में लगा दी। वह एक ऐसे व्यक्ति थे जिसने यूरोप की पाशविकता का सामना मानवीय यत्न के साथ किया और इस प्रकार सदा के लिए सबसे ऊँचे उठ गये। आने वाली पीढ़ियां शायद मुश्किल से ही यह विश्वास कर सकेगी कि गांधी जैसा हाड.मास का पुतला कभी इस धरती पर हुआ होगा। अब यह प्रश्न उठता है कि वर्तमान परिप्रेक्ष्य में गांधी वादी सामाजिक चिंतन का एक प्राशनिक हैध

हम कह सकते है कि आज भौतिकवादी युग में जहां सर्वत्र बिखराव नजर आ रहरहए गांधी जी के विचार सिद्धान्त सार्वभौमिक स्वरूप रखते है उनके दर्शन की प्रशांगिकता पहले भी थीण आज भी है तथा भविश्य में भी होगीए आवश्यकता केवल उनके बतलाये मार्ग पर चलने की है। महा देवी वर्मा अनुसार अनेक शताब्दियों के उपरान्त भी

मानव जाति अपने सत्यशोधक की ओर मुड़े मुड़ कर देखेगी। गांधी जैसा सार्व भौमिक व्यक्तित्व का अभिनंदन उनकी पार्थिव मूर्ति प्रतिष्ठा में नहीं बल्कि मनुष्य के हृदय में सत्य प्रतिष्ठा में है। आलोक कोई प्रतिमा नहीं गढ़ी जाती क्योंकि यह हमारी दृष्टि में अवस्थित होता है। हवा की प्राण प्रतिष्ठा किसी मंदिर में नहीं की क्योंकि उसे हम अपने प्राणों में लिए घूमते हैं।

अतः इस प्रकार यह स्पष्ट है कि गांधीजी का अस्तित्व सर्वकालिक रहेगा। इसे नकारा नहीं जा सकता। विज्ञान और तकनीकी के विकास की उत्तरोत्तर सीढ़ियों चढ़ता हुआ हमार देश पश्चिम का अंधानुकरण करता हुआ इकरिसवी सदी में प्रवेश कर चुका है। भोग और विलास के ढेरो माध्यम से आज का युवा भारतीय मानस पर दिग्भ्रमित और किंकर्तव्यविमूढ़ सा नजर आता है। यह आज ऐसे चौराहे पर आकर ठिठक कर खड़ा हुआ। जहां नैतिक उत्थान और पतन दोनों और जाने वाले राहते सामने है। वह इसमें से किस मार्ग का चुनाव करें इस असमंजस में पड़ा आज का समाज एवं कला का भविष्य यह युवा वर्ग एक सही दिशा बोध के इंतजार में हाथ पसारे खड़ा है। निश्चित ही गांधीवादी दर्शन उसे सही रास्ता दिखाने के लिए प्रासंगिक है। इसी सदर्भ में भारत के भूतपूर्व राष्ट्रपति डॉ० राजेन्द्र प्रहार का यह कहना पूर्णतः सत्य है किए यदि इस संसार में जीवित है और आपस की लड़ाई से टुकड़े.टुकड़े नहीं होना है तो गाधीवादी दर्शन के अनुसार ही चलना होगाए जो भारत के लिए ही नहींए बल्कि सारी दुनिया के लिए है।

संदर्भ.

1ण गाँधीए एम०के०.हरिजनए 20 मार्च 1936

2ण डॉ० पट्टाभि सीतारम्मैम्या कांग्रेस का इतिहास 3ण बेल डेनियल कर्मिग ऑफ पोस्ट इंडस्ट्रियल सोसायटी ए चेन्चर इन सोशल फोकोस्टिंग

4ण भारत का संविधानए 1999ण

5ण थॉमस एव नैनकी सोशल बीरिएपि 1951

6ण महोदय वर्मा.सोशल फिलासफी औक महथा गोरखपुरए 1958ण

7ण डॉ० राजेन्द्र प्रसाद एभूतपूर्व राष्ट्रपति.इडिया डिवाइडेडए